Social Psychology

Paper V

B.A. III (Hons.)

Social Psychology- Introduction

सामाज मनोविज्ञान एक ऐसा वैज्ञानिक अध्ययन है जो लोगों के विचारों (thoughts) , भावनाओं (feelings) और व्यवहारों (behaviours) को दूसरों की वास्तविक(actual), काल्पनिक(imagined) या निहित उपस्थिति(implied presence) से कैसे प्रभावित किया जाता है (Allport, 1998)। इस परिभाषा के अनुसार, वैज्ञानिक जांच के अनुभवजन्य (empirical) तरीके को संदर्भित (refer) करता है। इसके अनुसार विचारों, भावनाओं और व्यवहारों में वे सभी मनोवैज्ञानिक चर(psychological variable) शामिल होते हैं जो मनुष्य में ओसत दर्जे के होते हैं। दूसरों की कल्पना या निहित होने वाले बयान से यह पता चलता है कि हम सामाजिक प्रभाव(social influence) से तब भी ग्रस्त हैं जब कोई अन्य व्यक्ति मौजूद नहीं है, जैसे कि T.V. देखते समय या आंतरिक सांस्कृतिक मानदंडों(internalised cultural norms) का पालन करते हुए।

सामाज मनोविज्ञान एक अनुभवजन्य विज्ञान(empirical science) है जो प्रयोगशाला(laboratory) और क्षेत्र में दोनों परिकल्पनाओ(hypotheses) का परीक्षण करके मानव व्यवहार के बारे में विभिन्न प्रश्नों के उत्तर देने का प्रयास करता है। इस तरह का दृष्टिकोण व्यक्ति पर केंद्रित है, और यह समझाने का प्रयास करता है कि व्यक्तियों के विचार, भावनाएं और व्यवहार अन्य लोगों से कैसे प्रभावित होते हैं।

सामाज मनोविज्ञान का न केवल मनोविज्ञान, समाजशास्त्र(sociology) और सामान्य रूप से सामाजिक विज्ञानों(social sciences) के शैक्षणिक जगत पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा है, बल्कि इसने सार्वजनिक समझ(public understanding) और मानव सामाजिक व्यवहार(human social behaviour) की अपेक्षा को भी प्रभावित किया है। अत्यधिक सामाजिक प्रभावों(extreme social influence) के तहत लोग कैसे व्यवहार करते हैं, या इसके अभाव का अध्ययन करके, मानव स्वभाव को समझने में महान प्रगति की गई है। मनुष्य अनिवार्य रूप से सामाजिक प्राणी है, और इस प्रकार, सामाजिक संपर्क प्रत्येक व्यक्ति के स्वास्थ्य के लिए महत्वपूर्ण है। सामाजिक जीवन को प्रभावित करने वाले कारक व्यक्तिगत मनोवैज्ञानिक विकास(individual psychological development) और मानसिक स्वास्थ्य(mental health) को कैसे प्रभावित करते हैं, इसकी पड़ताल करने के माध्यम से, मानव जाति समग्र रूप से कैसे रह सकती है, इसकी एक बड़ी समझ उभर रही है।

समाज मनोविज्ञान की विषय वास्तु (Subject Matter of Social Psychology)

समाज मनोविज्ञान, मनोविज्ञान की एक प्रमुख शाखा है। समाज मनोविज्ञान की शुरुआत 1908 इ० से माना जाता है, जब **William McDougall** ने समाज मनोविज्ञान की सबसे पहली पाठ्य पुस्तक (textbook) 'Introduction to Social Psychology' प्रकाशित की। तब से आज तक के समाज मनोवैज्ञानिकों ने समाज मनोविज्ञान की विषय वास्तु का अध्ययन भिन्न भिन्न ढंग से कर के इसे अपने अपने दृष्टिकोणों से परिभाषित किया है। विभिन मनोवैज्ञानिकों के अनुसार - समाज मनोविज्ञान की विषय वास्तु सामाजिक अन्तः क्रिया है। सामाजिक अन्तः क्रिया से तात्पर्य दो या दो से अधिक व्यक्तियों के बीच होने वाली अन्तः क्रियाओं से होता है। करीब करीब समाज मनोवैज्ञानिकों ने अपनी अपनी परिभाषाओं में इसी सामाजिक अन्तः क्रिया को केंद्र मान कर समाज मनोविज्ञान के स्वरुप की व्याख्या करने का प्रयत्न किया है। कुछ समाज मनोवैज्ञानिक जैसे- **Kimble Young** (1962), **Kretch, Crutchfield and Ballachey, Allport** (1968), **Fisher** (1982), **Fieldman** (1985) तथा **Mayers** (1988) ने समाज मनोविज्ञान को परिभाषित किया है, परन्तु इनमे **Kretch, Crutchfield ans Ballachey** (1962) तथा **Mayers** (1988) की परिभाषा को संतोषजनक माना गया है। **Kretch, Crutchfield and Ballachey** (1962) के अनुसार- समाज मनोविज्ञान, समाज में व्यक्ति के व्यवहारों का अध्ययन विज्ञान है। ("Social psychology is the science of the behaviour of the individual in society.")

According to **Mayers** (1988) - व्यक्ति दूसरों के बारे में किस तरह सोंचता है, दूसरों को कैसे प्रभावित करता है तथा एक दूसरे को किस तरह सम्बंधित करता है, का वैज्ञानिक अध्ययन की समाज विज्ञानं है। ("Social psychology is the discipline that examines how a person's thoughts, feelings and actions are affected by others.")

इन परिभाषाओं को ध्यान में रखते हुए समाज मनोविज्ञान कि एक सामान्य परिभाषा इस प्रकार दी जा सकती है- समाज मनोविज्ञान, व्यक्ति के व्यव्हार तथा अनुभूतियों का सामाजिक परिस्थिति में व्यव्हार करने का एक विज्ञानं है। ("Social psychology is the science of study of the behaviour and experience of the individual in social situations.")

इन परिभाषाओं का विश्लेषण करने के बाद निम्नलिखित बातें स्पष्ट होती हैं-

1) समाज मनोविज्ञान एक विज्ञानं है तथा मनोविज्ञान की एक शाखा है।

2)समाज मनोविज्ञान में व्यक्ति के व्यवहारों अवं अनुभूतियों का अध्ययन किया जाता है।

3) एक समाज मनोवैज्ञानिक इन व्यवहारों अवं अनुभूतितों का अध्ययन सामाजिक परिस्थिति में करता है।

समाज मनोविज्ञान की विषय वास्तु सामाजिक अन्तः क्रिया है। अन्तः क्रिया दो प्रकार की होती है-

1) आमने सामने की अन्तः क्रिया (face-to-face interaction) इसमें एक व्यक्ति की अन्तः क्रिया दूसरे व्यक्ति से, जो उसके सामने उपस्थित होता है, उससे होती है, तथा

2) प्रतीकात्मक अन्तः क्रिया (symbolic interaction) इस अन्तः क्रिया में दो अलग अलग जगहों पर रहने वाले व्यक्तियों के बीच अन्तः क्रिया होती है।

समाज मनोविज्ञान में इन दोनों तरह की अन्तः क्रिया का अध्ययन किया जाता है। समाज मनोवैज्ञानिकों ने स्पष्ट कर दिया है की social interaction तीन प्रकार का होता है-

1) व्यक्ति तथा व्यक्ति के बीच में अन्तः क्रिया (interaction between individuals)- दो व्यक्तिओं के बीच बातचीत होना यह अन्तः क्रिया का एक अच्छा उदाहरण है।

2) व्यक्ति तथा समूह के बीच अन्तः क्रिया (interaction between a person and group)- शिक्षक द्वारा वर्ग में छात्रों को पढ़ाना तथा नेता द्वारा श्रोतागण को भाषण सुनाना, यह इस तरह के अन्तः क्रिया का उदाहरण है।

3) समूह तथा समूह के बीच अन्तः क्रिया (interaction between groups)- सिपाही के दो दलों के बीच संघर्ष, खिलाड़ीयों के दो दलों के बीच खेल खेलना, दो देशों के बीच वार्ता आदि इस प्रकार की अन्तः क्रिया के उदाहरण हैं।

समाज मनोविज्ञान की विषय वास्तु में इन तीनों तरह की अन्तः क्रिया का समावेश होता है। इन विभिन्न अन्तः क्रियाओं के समावेश के कारण ही Kretch, Crutchfield and Ballachey (1962) ने समाज मनोविज्ञान को अन्तः व्यक्तिक व्यव्हार की घटनाओं को विज्ञान कहा है।

सामाज मनोविज्ञान और समाजशास्त्र के बीच संबंध

(Relation Between Social Psychology and Sociology)

सामाज मनोविज्ञान, मनोविज्ञान की एक शाखा है जो अपने समूह की सदस्यता और इंटरैक्शन और सामाजिक जीवन, सामाजिक स्थिति, भूमिका और सामाजिक वर्ग को प्रभावित करने वाले अन्य कारकों के रूप में व्यक्तियों के संज्ञानात्मक, स्नेहपूर्ण और व्यवहार प्रक्रियाओं का अध्ययन करता है। सामाजिक मनोविज्ञान व्यवहार, रूढ़ियों, भेदभाव, समूह की गतिशीलता, अनुरूपता, सामाजिक अनुभूति और प्रभाव, आत्म-अवधारणा, अनुनय, पारस्परिक धारणा और आकर्षण, संज्ञानात्मक असंगति और मानव संबंधों के विकास पर सामाजिक संपर्कों के प्रभावों की जांच करता है।

सामाज मनोवैज्ञानिकों की एक महत्वपूर्ण संख्या समाजशास्त्री हैं। उनके काम में समूह के व्यवहार पर अधिक ध्यान केंद्रित किया गया है, और इस तरह इस तरह की घटनाओं को सूक्ष्म स्तर पर बातचीत और सामाजिक आदान-प्रदान के रूप में और मैक्रो-स्तर पर समूह की गतिशीलता और भीड़ मनोविज्ञान की जांच करता है। समाजशास्त्री व्यक्ति में रुचि रखते हैं, लेकिन मुख्य रूप से सामाजिक संरचनाओं और प्रक्रियाओं के संदर्भ में, जैसे कि सामाजिक भूमिकाएं, नस्ल और वर्ग, और समाजीकरण। वे गुणात्मक और मात्रात्मक अनुसंधान डिजाइन दोनों का उपयोग करते हैं। इस क्षेत्र में समाजशास्त्री विभिन्न प्रकार के जनसांख्यिकीय, सामाजिक और सांस्कृतिक घटनाओं में रुचि रखते हैं। उनके कुछ प्रमुख अनुसंधान क्षेत्र सामाजिक असमानता, समूह की गतिशीलता, सामाजिक परिवर्तन, समाजीकरण, सामाजिक पहचान और प्रतीकात्मक सहभागिता हैं।

सामाज मनोविज्ञान मनोविज्ञान के हित (व्यक्ति पर इसके जोर के साथ) समाजशास्त्र के साथ (सामाजिक संरचनाओं पर जोर देने के साथ) को प्रभावित करता है। अधिकांश सामाजिक मनोवैज्ञानिकों को मनोविज्ञान के अनुशासन के भीतर प्रशिक्षित किया जाता है। मनोवैज्ञानिक रूप से उन्मुख शोधकर्ता तत्काल सामाजिक स्थिति पर जोर देते हैं, और व्यक्ति और स्थिति चर के बीच बातचीत। उनका शोध अत्यधिक अनुभवजन्य है और अक्सर गोल प्रयोगशाला प्रयोगों को केंद्रित किया जाता है। मनोवैज्ञानिक जो सामाजिक मनोविज्ञान का अध्ययन करते हैं, वे ऐसे विषयों में रुचि रखते हैं जैसे कि दृष्टिकोण, सामाजिक अनुभूति, संज्ञानात्मक असंगति, सामाजिक प्रभाव और पारस्परिक व्यवहार। इस क्षेत्र में शोध के प्रकाशन के लिए दो प्रभावशाली पत्रिकाएँ हैं जर्नल ऑफ़ पर्सनैलिटी एंड सोशल साइकोलॉजी और द जर्नल ऑफ़ एक्सपेरिमेंटल सोशल साइकोलॉजी.

समाज मनोविज्ञान तथा समाजशास्त्र के बीच घनिष्ट सम्बन्ध होने के कारण कई समानताएं दिखाई पड़ती हैं-

1) दोनों की गणना सामाजिक विज्ञान के अंतर्गत होता है।

2) दोनों में समूह तथा भीड़ का अध्ययन किया जाता है।

3) दोनों में संस्कृति तथा व्यक्तित्व का अध्ययन किया जाता है।

4) दोनों में सर्वे विधि () तथा क्षेत्र अध्ययन किया जाता है।

5) दोनों का दृष्टकोण आनुभविक होता है।

फिर भी, समाज मनोविज्ञान तथा समाजशास्त्र में कई स्पष्ट अंतर हैं-

1) समाज मनोविज्ञान एक समर्थक विज्ञान है, जब की समाजशास्त्र नहीं है।

2) समाज मनोविज्ञान के अध्ययन का केंद्र व्यक्ति है, जब की समाजशास्त्र के अध्ययन का केंद्र समाज या समूह है।

3) समाजशास्त्री प्रधानता समूह या समाज में व्यक्तियों के सामाजिक व्यवहारों की सामानताओं तथा समस्याओं में रूचि रखते हैं तथा इनकी व्याख्या समान सांस्कृतिक प्रतिरूपों के आधार पर करते हैं।

4) दूसरी ओर समाज मनोवैज्ञानिक सामाजिक व्यवहारों की विभिन्ताओं पर भी बल देते हैं तथा इनकी व्याख्या जैविक तथा सामाजिक एवं सांस्कृतिक कारकों के ादार पर करते हैं।

5) समाज मनोविज्ञान में प्रयोग विधि के उपयोग के कारण समाजशास्त्र की अपेक्षा अधिक वैज्ञानिकता पायी जाती है।

समाज मनोविज्ञान तथा मानवशास्त्र में सम्बन्ध

(Relation between Social Psychology and Anthropology)

मानवशास्त्र में मनुष्य तथा संस्कृति (culture) के उदभव का तथा विकास का अध्ययन किया जाता है। समाज मनोविज्ञान में सामाजिक परिस्थितियों में व्यक्ति के व्यवहार का अध्ययन किया जाता है। लेकिन व्यक्ति, समाज तथा संस्कृति में गहरा सम्बन्ध है। व्यक्ति के व्यवहार का समुचित अध्ययन समाज तथा संस्कृति के अध्ययन के बिना संभव नहीं है। कारण व्यक्ति के व्यवहार पर सामाजिक तथा सांस्कृतिक कारकों का प्रभाव पड़ता है। सेकर्ड एवं बैकमैन (1974) ने स्पष्ट शब्दों में कहा है की सामाजिक व्यवहार या पारस्परिक प्रतिक्रिया में समुचित अध्ययन के लिए इसका विश्लेषण व्यक्तित्व तंत्र के साथ साथ सामाजिक तंत्र तथा सांस्कृतिक तंत्र के आलोक में आवश्यक है। इसका अर्थ यह हुआ की समाज मनोविज्ञान तथा मानवशास्त्र में बड़ा गहरा सम्बन्ध है। मानवशास्त्र के कुछ सामग्रियों (जैसे- संस्कृति) का अध्ययन समाज मनोविज्ञान के सम्बन्ध में भी किया जाता है।

इन दोनों विज्ञानों में कुछ सामानताएँ पायी जाती हैं, जिससे इनके बीच घनिष्ट सम्बन्ध का बोध होता है-

1) इन दोनों विज्ञानों की गणना सामाजिक विज्ञानों के अन्तर्गत की जाती है।

2) दोनों में संस्कृति तथा समाज का अध्ययन प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से होता है।

3) दोनों में सर्वे विधि तथा क्षेत्र अध्ययन का उपयोग किया जाता है।

फिर भी यह दोनों दो भिन्न विज्ञान हैं। कारण इनमें कई अंतर पाए जाते हैं-

1) समाज मनोविज्ञान को एक समर्थक विज्ञान मन जाता है, जब की मानवशास्त्र को नहीं।

2) समाज मनोविज्ञान की विषय वस्तु वास्तव में सामाजिक मानव है जब की मानवशास्त्र की विषय वस्तु समाज या संस्कृति है।

3) समाज मनोविज्ञान का सम्बन्ध व्यक्ति के वर्त्तमान व्यवहार से है जब की मानवशास्त्र का सम्बन्ध मानव जीवन के अतीत की घटनाओं से है।

4) समाज मनोविज्ञान में व्यक्ति के व्यवहार पर संस्कृति के प्रभाव का अध्ययन किया जाता है जब की मानवशास्त्र में संस्कृति के क्रमिक विकास का अध्ययन किया जाता है।

समाज मनोविज्ञान का सम्बन्ध अन्य कई सामाजिक विज्ञानों जैसे इतिहास, अर्थशास्त्र, राजनीतिशास्त्र आदि से भी है।

-**Dr. Hena Hussain**

Asst. Professor

Department of Psychology